अस्थाई निवास के रूप में क्षमता रखती हो।" (Any asset capable of serving as a temporary abode of purchasing power).[1]

इस प्रकार फ्रीडमैन मुद्रा की दो प्रकार की परिभाषाएं देता है। एक सैद्धांतिक आधार पर और दूसरी अनुभवसिद्ध आधार पर। इससे बहुत वाद-विवाद उत्पन्न हुआ जिसे फ्रीडमैन ने कार्यपद्धति-विषयक (methodological) विवादों के आधार पर सुलझाने का प्रयत्न किया। फ्रीडमैन के अनुसार, "मुद्रा की परिभाषा की खोज नियम के आधार पर नहीं करनी चाहिए बल्कि आर्थिक संबंधों के हमारे ज्ञान को सुव्यवस्थित करने में लाभदायकता के आधार पर।"[2] अत: अनुभवसिद्ध उद्देश्यों के लिए प्रयोग की गई परिभाषा अमहत्वपूर्ण है क्योंकि भिन्न परिभाषाएं भिन्न परिणाम देंगी। अनुभवसिद्ध परिणाम अन्तत: परिसंपत्तियों की प्रकृति पर निर्भर करेंगे जो मुद्रा की क्रयशक्ति के अस्थाई निवास के रूप में परिभाषा में सम्मिलित है। इस प्रकार फ्रीडमैन मुद्रा की अपनी परिभाषा में दृढ़ (rigid) नहीं है और विस्तृत दृष्टिकोण रखता है जिसमें बैंक जमा, गैर-बैंक जमा और कई अन्य प्रकार की परिसंपत्तियां शामिल होती हैं, जिनके द्वारा मौद्रिक अधिकारी रोजगार, कीमतों और आय के भावी-स्तर या किसी अन्य महत्वपूर्ण समष्टि चर को प्रभावित करता है।

3. **रेडक्लिफ की परिभाषा** (Radcliffe Definition)—रेडक्लिफ समिति[3] ने मुद्रा को "नोट योग बैंक जमा" (note plus bank deposits) के रूप में परिभाषित किया। इसमें केवल वे परिसंपत्तियां शामिल हैं, जो सामान्यतौर से विनिमय के माध्यम के रूप में प्रयोग की जाती हैं। परिसंपत्तियों से अभिप्राय तरल परिसंपत्तियों से है जिनका अर्थ है वस्तुओं और सेवाओं के लिए कुल प्रभावी मांग को प्रभावित कर रही मौद्रिक मात्रा। इसमें व्यापक रूप से साख (credit) को शामिल समझा जाता है। इस प्रकार, समस्त तरलता स्थिति व्यय करने के निर्णयों से संबद्ध होती है। व्यय करना बैंक में नकदी या मुद्रा तक सीमित नहीं है, बल्कि मुद्रा की वह मात्रा है जिसे लोग एक परिसंपत्ति बेचकर या उधार लेकर या जैसे बिक्री से प्राप्त आय समझकर धारण कर सकते हैं। समिति ने मुद्रा के प्रचलन वेग (velocity of circulation) की धारणा का प्रयोग नहीं किया क्योंकि संख्यात्मक स्थिरांक के रूप में इसमें कोई भी व्यावहारिक मात्रा नहीं पाई जाती है।

अशोधित अनुभवसिद्ध प्रयोगों के आधार पर कमेटी ने ब्याज दर द्वारा मुद्रा और आर्थिक क्रिया के बीच प्रत्यक्ष या परोक्ष संबंध नहीं पाया। परन्तु उसने सरलता के आधार पर इनमें नया संक्रमण तंत्र (transmission mechanism) प्रदान किया। उसने व्याख्या की कि ब्याज दरों में गति का अर्थ है वित्तीय संस्थाओं द्वारा धारित बहुत-सी परिसंपत्तियों के पूंजी मूल्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन। ब्याज दरों में वृद्धि होने से कुछ उधारदाता कम उधार देते हैं, क्योंकि पूंजी मूल्य गिर जाते हैं और अन्य इसलिए कि उनका ब्याज-दर ढ़ाचा दृढ़ (sticky) होता है। दूसरी ओर, ब्याज दर में गिरावट उनके तुलन-पत्रों में वृद्धि करती है और उधारदाताओं को नया व्यवसाय खोजने के लिए प्रोत्साहित करती है।

4. **गुर्ले-शा परिभाषा** (Gurley-Shaw Definition)—गुर्ले तथा शा[4] वित्तीय मध्यस्थों द्वारा रखी गई काफी मात्रा में तरल परिसंपत्तियां और गैर-बैंक मध्यस्थों की देयताओं को मुद्रा के निकट स्थानापन्न समझते हैं। मध्यस्थ संचय के रूप में मुद्रा के लिए स्थानापन्न प्रदान करते हैं। यथार्थ मुद्रा

---

1. M. Friedman : *Employment, Growth and Price Level*, 1959.
2. M. Friedman and A.J. Schwartz : *Monetary, Statistics of the United States*, 1970.
3. *Report of the Committee on the Working of the Monetary System*, 1959.
4. J.G. Gurley and E.S. Shaw, *Money in a Theory of Finance*, 1960.

Scanned with CamScanner

जिसे करेंसी योग मांग जमा परिभाषित किया गया है, केवल एक तरल परिसंपत्ति है। इस प्रकार, उन्होंने तरलता पर आधारित मुद्रा की एक विस्तृत परिभाषा निर्मित की है जिसमें बांड, इंशयोरेंस रिज़र्व, पेंशन फंड, बचत और ऋण शेयर शामिल हैं। वे मुद्रा स्टॉक के वेग (velocity) में विश्वास रखते हैं जो गैर-बैंक मध्यस्थों द्वारा प्रभावित होता है। उनके मुद्रा की परिभाषा पर विचार अपने और गोल्डस्मिथ की अनुभवसिद्ध जांचों पर आधारित हैं।

5. **पेसक-सेविंग परिभाषा** (Pesek-Saving Definition)—पेसक और सेविंग[1] के अनुसार, मुद्रा में बैंकों के मांग जमा और सरकार द्वारा जारी मुद्रा शामिल होने चाहिएं। वे बैंक मुद्रा में समय और बचत खाते शामिल नहीं करते हैं। वे कुल मुद्रा को, जिसमें मांग-जमा शामिल है, समाज की शुद्ध संपत्ति मानते हैं। वे मुद्रा की ऋण के साथ तुलना करते हैं। मुद्रा ब्याज नहीं देती लेकिन ऋण ब्याज देता है। ऋण स्वयं संपत्ति नहीं है, क्योंकि जो बैंक मुद्रा को धारण करते हैं, उसे एक परिसंपत्ति मानते हैं, जबकि बैंक उसे प्रभावी देयता मानते हैं।

इस प्रकार, पेसक और सेविंग मुद्रा की एक व्यवहार्य परिभाषा का अनुसरण करते हैं जिसमें तीन शर्तें शामिल हैं: *प्रथम*, वे वस्तु, मुद्रा और आदेश (fiat) मुद्रा को उनके धारकों की परिसंपत्ति के रूप में मानते हैं और किसी की भी देयताएं नहीं मानते। *दूसरे*, सरकार कमर्शियल बैंकों को मुद्रा निर्माण के लिए एकाधिकार अधिकार प्रदान करती है,[2] जो आगे व्यक्तियों के निजी ऋणों के लिए बैंक मुद्रा बेचकर इसका प्रयोग करते हैं। जिन व्यक्तियों के पास बैंक मुद्रा होती है वे इसे पूर्णरूप से एक परिसंपत्ति मानते हैं। दूसरी ओर, बैंक इसे एक प्रभावी देयता मानते हैं। अत: पेसक और सेविंग बैंक मुद्रा *घटा* रिज़र्व (जो बैंक अपने जमाकर्त्ताओं की मांग को पूरा करने के लिए रखते हैं) को अर्थव्यवस्था की शुद्ध परिसंपत्ति मानते हैं। तुलन-पत्र में, बैंक मुद्रा को एक परिसंपत्ति और निजी ऋणों को एक देयता दिखाया जाता है। *तीसरे*, यदि बैंक मुद्रा निर्मित करना लागतरहित हो और जमा पर कोई ब्याज भुगतान नहीं दिए जाते, तो बैंक को शुद्ध संपत्ति (net worth) अपरिवर्तित रहती है क्योंकि परिसंपत्तियां और देयताएं दोनों समान मात्रा में बढ़ते हैं। यह दर्शाता है कि बैंक की शुद्ध संपत्ति शून्य है।

पेसक और सेविंग बैंक मुद्रा में समय और बचत जमाओं को शामिल नहीं करते हैं। परन्तु जब ब्याज भुगतान हों तो वे बैंक मुद्रा में सम्मिलित होते हैं। उनका तर्क है कि एक बार जब ये जमाएं ब्याज देना प्रारंभ करती हैं, तो वे मुद्रा का कार्य करती रहेंगी।

आलोचनाएं *(Criticism:)*—पेसक एवं सेविंग की परिभाषा की निम्न आलोचनाएं की गई हैं—

1. फ्रीडमैन और शवार्टज के अनुसार, पेसक एवं सेविंग की स्थिति का तर्क यह है कि मुद्रा शुद्ध-संपत्ति के रूप में उच्च शक्तियुक्त मुद्रा (high-powered money) होनी चाहिए जिसे पेसक एवं सेविंग ने बहुत संकुचित कहकर अस्वीकार कर दिया। इस प्रकार, उच्च-शक्तियुक्त मुद्रा पेसक एवं सेविंग की प्रथम कसौटी को पूरा करती है।

2. पेसिक एवं सेविंग विश्लेषण में पेटिनकिन कुछ भ्रांति पाता है, जब वे बैंक-मुद्रा में समय और बचत जमा शामिल नहीं करते हैं। पेसिक एवं सेविंग बैंकों द्वारा प्रयोग किए गए परंपरागत लेखांकन तरीकों की भी आलोचना करते हैं। परन्तु पेटिनकिन उनके मुद्रा निर्माण के विश्लेषण की परंपरागत

---

1. B.P. Pesek and T.R. Saving, *Money, Wealth and Economic Theory*, 1967.
2. अमरीका में पांच बड़े बैंकों को नोट छापने का अधिकार प्राप्त है।

Scanned with CamScanner

लेखांकन द्वारा व्याख्या करता है और उसे अधिक लाभदायक पाता है।

3. पेसिक एवं सेविंग की आलोचना सामाजिक संपत्ति को परिभाषित करने में बैंक-मुद्रा की दोहरी गणना करने के लिए भी की गई है। *प्रथम*, वे इसमें मुद्रा पूर्ति का भाग शामिल करते हैं, और फिर वे बैंकिंग प्रणाली को शुद्ध संपत्ति को अन्य तत्व में सम्मिलित करते हैं। वास्तव में, एक या दूसरे की गणना करनी चाहिए, न कि दोनों की।

इन आलोचनाओं के बावजूद, पेसक और सेविंग का मुद्रा पर विचार महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे शुद्ध संपत्ति का अध्ययन करते हैं जो कमर्शियल बैंकों को प्राप्त होती है।

3. मुद्रा का वर्गीकरण अथवा प्रकार (CLASSIFICATION OR TYPES OF MONEY)

मुद्रा का वर्गीकरण विभिन्न आधारों पर किया जाता है—(1) जिन वस्तुओं से मुद्रा बनाई गई है उनकी भौतिक विशिष्टताएं या मौद्रिक प्रणाली कसौटी; (2) मुद्रा को जारी करने वाले की प्रकृति जैसे सरकार, केन्द्रीय बैंक, कमर्शियल बैंक, अथवा अन्य कोई या स्वीकार्यता कसौटी; और (3) मुद्रा के रूप में मुद्रा के मूल्य तथा वस्तु के रूप में मुद्रा के मूल्य के बीच सम्बन्ध जिसे केन्ज़ लेखा मुद्रा तथा यथार्थ मुद्रा कहता है। मुद्रा के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या करने में हम मोटे तौर पर इसी वर्गीकरण का अनुसरण करेंगे।

1. मुद्रा-प्रणाली कसौटी (Monetary System Criterion)

मुद्रा-प्रणाली कसौटी मुद्रा का तीन प्रकार से वर्गीकरण करती है: 1. धातु मुद्रा; 2. कागज मुद्रा; और 3. साख मुद्रा। जिनकी व्याख्या यहां की जा रही है—

(1) **धातु-मुद्रा (Metallic Money)** सोना, चांदी, निकल, तांबा आदि जैसी किसी भी धातु से बनी मुद्रा को धातु-मुद्रा कहते हैं। धातु-मुद्रा का आगे मानक मुद्रा, प्रतीक मुद्रा तथा सहायक मुद्रा के रूप में वर्गीकरण किया गया है।

(i) मानक मुद्रा (Standard Money)—मानक मुद्रा "वह मुद्रा है जिसका मूल्य वस्तु के रूप में गैर-अमौद्रिक उद्देश्यों के लिए भी उतना ही है जितना की मुद्रा के रूप में उसका मूल्य है।" इस तरह की मुद्रा सिक्कों के रूप में होती है जिसका अंकित मूल्य उसके यथार्थ मूल्य अथवा धातु-मूल्य के बराबर होता है। इस तरह के सिक्कों का धारक चाहे तो उन्हें पिघलाकर धातु के रूप में अथवा मुद्रा के रूप में प्रयोग कर सकता है, क्योंकि सिक्कों में धातु का मूल्य उतना ही होता है जितना उनका मौद्रिक मूल्य है। इसलिए मानक मुद्रा को पूर्ण मूल्य मुद्रा भी कहते हैं। 1835 से 1893 के बीच भारत का एक रुपये का सिक्का पूर्ण-मूल्य सिक्का होता था। फिर, मानक मुद्रा ऐसी असीमित वैध मुद्रा (legal tender) है जिसमें कितनी भी राशि का भुगतान किया जा सकता है।

(ii) प्रतीक मुद्रा (Token Money)—प्रतीक मुद्रा वह प्रतिनिधि मुद्रा है जिसका यथार्थ मूल्य उसके अंकित मूल्य से कम होता है। भारत में जो एक रुपये का सिक्का चल रहा है, वह प्रतीक सिक्का है। यदि उसे पिघलाया जाए, तो इसकी धातु एक रुपये में नहीं बिकेगी।

(iii) सहायक मुद्रा (Subsidiary Money)—सहायक मुद्रा का काम प्रतीक मुद्रा की सहायता करना है। पांच पैसे से 25 पैसे तक के जो सिक्के भारत में चलते हैं, वे सभी सहायक मुद्रा हैं। इस तरह के सिक्के वैध मुद्रा हैं जिनसे भारत में केवल 25 रुपये तक का भुगतान किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner